दादा भगवान परिवार का

जून २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

प्रार्थना

संपादकीय

बालमित्रों,

मान लीजिए कि आपके पास एक फोन नंबर है। उस नंबर पर बात करने के बाद अगर आप पढ़ाई करने बैठते हो तो अच्छी तरह पढ़ाई कर सकते हो और एग्ज़ाम में एकाग्रता से लिख सकते हो। कोई काम करने में डर लग रहा हो तो वहाँ फोन करने से डर गायब हो जाता है। बीमारी के समय वहाँ फोन करने से शक्ति मिलती है और यदि किसी का दुःख देखकर दुःख होता है तो वहाँ फोन करने से शांति मिलती है।

बताओ, ऐसा फोन नंबर आप संभाल कर रखोगे या नहीं? यह फोन नंबर हम सभी के पास है और किसी भी समय हम वहाँ फोन कर सकते हैं। यह फोन है, 'प्रार्थना'। ज्ञानी से समझें कि यहाँ फोन कैसे करना है और इसका क्या महत्व है। सोनू ने कौनसा प्रयोग किया और क्या सिग्नल भेजे? और फेल्को ने किस तरह सबको रोग मुक्त किया? थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स को यूरोप टूर में क्या जानने को मिला? और चिली के साथ आगे क्या हुआ? चलो, यह पढ़ने के लिए तैयार हो जाओ।

अक्रम एक्सप्रेस

June, 2025
Year 13, Issue : 03
Conti. Issue No.: 146
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना का क्या महत्व है? प्रार्थना कैसे करनी चाहिए?

पूज्यश्री : हमने जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। सभी को सुख मिले, किसी को दुःख न हो, ऐसी प्रार्थना कर सकते हो। उसके पास बढ़िया गाड़ी है, मुझे भी वैसी मिले, इसे प्रार्थना नहीं कहते हैं, यह मोह कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : हमारी प्रार्थना का क्या असर होता है?

पूज्यश्री : प्रार्थना एक पॉज़िटिव एविडन्स है, इससे पॉज़िटिव संयोग इकट्ठा होते हैं, पॉज़िटिव परिणाम आता है। कोई दुःखी हो, शरीर में कोई बीमारी या वेदना हो तो प्रार्थना करें कि 'हे दादा भगवान, उसे शक्ति दीजिए।' तो पॉज़िटिव परिणाम आएगा। दूसरों के लिए प्रार्थना करने से (आपको) खुशी मिलेगी।

प्रश्नकर्ता : मुझे यह समझना है कि प्रार्थना कैसे करते हैं?

दादाश्री : प्रार्थना दिल से करनी चाहिए। कई लोगों की हृदयपूर्वक आँसूओं सहित प्रार्थना होती है, तब जाकर वह पहुँचती है और उसका फल मिलता है। प्रार्थना करते समय यदि चित्त दूसरी जगह पर हो तो वह सच्ची प्रार्थना नहीं कहलाती।

प्रार्थना हेतुपूर्वक होनी चाहिए, कोई हेतु होना चाहिए। यों ही प्रार्थना करने का कोई मतलब नहीं है। प्रार्थना यानी फोन करना। सामने वाला पूछेगा न कि 'भाई, फोन क्यों किया है? तुम मुझे बताओ तो सही।' मोक्ष में जाने के लिए भी प्रार्थना करनी पड़ती है और संसारी चीज़ के लिए भी प्रार्थना करनी पड़ती है।

सच्चे दिल से की हुई प्रार्थना निष्फल नहीं जाती। (फल मिले बिना नहीं रहता)

यह तो नई ही बात है!

एक व्यक्ति भगवान से रोज़ प्रार्थना करता है कि 'हे भगवान! मुझे सुखी करो, सुखी करो।' दूसरा व्यक्ति प्रार्थना करते समय बोलता है कि 'हे भगवान! घर के सभी लोग सुखी हों।' उसमें खुद तो आ ही जाता है। सच्चा सुखी दूसरा वाला व्यक्ति होता है।

वाइब्रेशन्स

‘सोनू, तुम इतने खुश क्यों हो?’

‘क्योंकि कल तुम पिकनिक पर जा रहे हो’, सोनू ने हँसते हुए कहा।

‘झूठ मत बोलो। पिकनिक पर मैं जा रहा हूँ, तो तुम क्यों खुश हो?’ वीर को आश्चर्य हुआ।

‘तुम नहीं रहोगे तो पूरा कमरा मेरा होगा। मेरे लिए तो स्वतंत्रता दिवस ही कहलाएगा न? और कल तो पूरा दिन मैं अकेला रहूँगा। तुम पिकनिक पर जाओगे, मम्मी ऑफिस के काम से जल्दी निकल जाएँगी और पापा दूसरे शहर गए हैं। तुम्हें तो पता चल गया होगा न कि मैं क्या करने वाला हूँ...’ सोनू ने कहा।

‘हाँ, हाँ, करना। तुम्हें जो करना है वो करना।’ वीर अपनी पिकनिक बैग पैक करके सो गया।

सुबह जल्दी उठकर वीर तैयार हो गया। वह शूज़ पहनकर दरवाजे के

पास मम्मी का इंतजार कर रहा था। तभी उसे मम्मी की आवाज़ सुनाई दी, 'वीर बेटा, तुमने प्रार्थना की या नहीं?'

'नहीं मम्मा... भूल गया।' वीर ने फटाफट शूज़ निकाले।

भगवान के पास जाकर वीर ने हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर प्रार्थना की, 'हे भगवान, हमेशा हमारे साथ रहना। जगत् का कल्याण करना।' बचपन से ही मम्मी ने वीर और सोनू को यह सिखाया था कि वे घर से बाहर जाते समय यह प्रार्थना करके ही घर से बाहर निकलें।

सोनू आँखें मलते हुए रूम से बाहर आया, 'मज़े करना, भाई।'

'तुम भी, सोनू। ज्यादा शरारत मत करना और हाँ, तुम्हारे साइन्स एक्सपरिमिन्ट को मेरी चीज़ों से दूर रखना।' वीर ने कहा।

मम्मी सोनू को घर की देखभाल करने के निर्देश देकर वीर को लेकर निकल गई। स्कूल पहुँचे तब तक पिकनिक बस आ चुकी थी। बच्चे और टीचर्स, स्कूल के ग्राउन्ड में खड़े थे।

'एन्जॉय करना बेटा। और रात को मुझे सारी बातें बताना। ओके?' मम्मी ने वीर के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

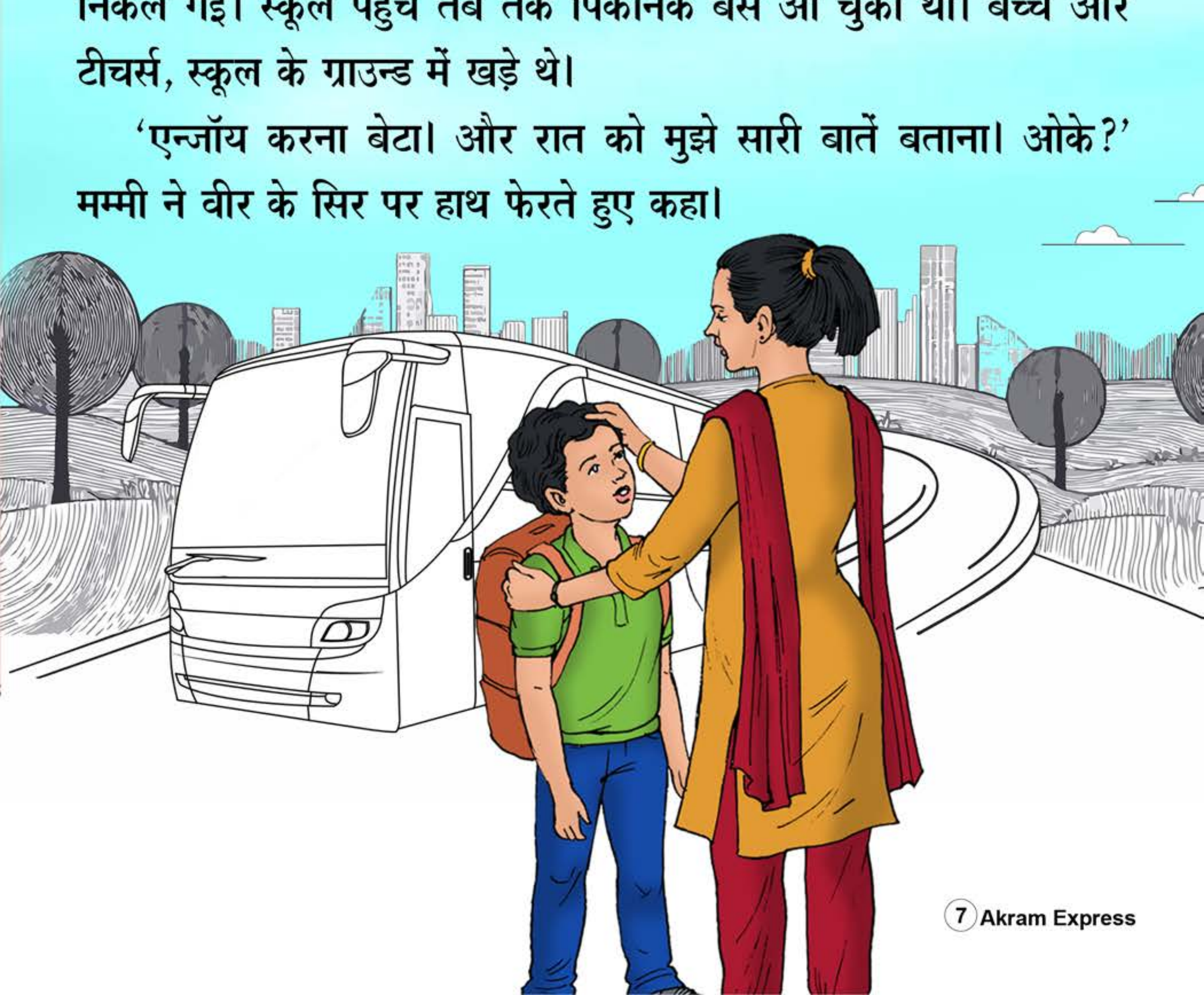

वीर ने 'हाँ' में सिर हिलाया और अपने फ्रेन्ड्स के पास भाग गया। कुछ ही देर में सभी बच्चे बस में बैठ गए।

टीचर्स के साथ चौबीस-पच्चीस साल का एक युवक भी था, जिसे बच्चे पहली बार देख रहे थे। युवक ने अपना परिचय दिया, 'हाइ लिटल फ्रेन्ड्स, मेरा नाम चिंतन है। मैं भी तुम्हारी तरह एक स्टूडन्ट हूँ। इंडियन हिस्ट्री में पीएच. डी. कर रहा हूँ। और आज मैं आपके साथ हमारे पिकनिक स्थलों की नई-नई बातें शेयर करूँगा।'

बच्चों को चिंतन सर के साथ बहुत मज़ा आया। बस में चिंतन सर और टीचर्स ने बच्चों के साथ गेम्स खेले। फिर पिकनिक स्थल पर पहुँचकर चिंतन सर ने बच्चों को अजब-गजब बातें बताई। पता ही नहीं चला, पूरा दिन कैसे बीत गया। वापस स्कूल लौटने के लिए बस रवाना हुई। वे लोग निश्चित समय से डेढ़ घंटा पहले ही निकल गए थे। इसलिए चिंतन सर और टीचर्स सोच रहे थे कि और क्या किया जा सकता है।

और इधर सोनू ने पूरा दिन अपने 'स्पेस स्टेशन' साइन्स प्रोजेक्ट पर काम किया। यह काम करना उसे इतना पसंद था कि उसे टाइम का पता ही नहीं चलता था। कभी-कभी तो वह खाना भी भूल जाता था। प्रोजेक्ट पूरा हो

जाने के बाद उसने टी.वी. ऑन किया और डिस्कवरी चैनल सेट किया। ऐस्ट्रनॉट सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष से कुछ मैसेज दे रही थीं। सोनू को लगा कि 'ये कैसे वाइब्रेशन होंगे! कोई अंतरिक्ष में बोल रहा है और मुझे यहाँ दिखाई दे रहा है और सुनाई दे रहा है।' ये सब बातें सोनू में बहुत उत्सुकता पैदा करती थीं।

बाहर अंधेरा होने लगा था। अब सोनू अपने भाई की राह देख रहा था। तभी फोन की घंटी बजी।

'सोनू बेटा, तुम ठीक हो न?' मम्मी ने पूछा। उनकी आवाज़ में थोड़ी घबराहट थी।

'हाँ, मम्मी। क्या हुआ?' सोनू ने पूछा।

'मेरी बात ध्यान से सुनो। बात ऐसी है कि वीर की पिकनिक बस अभी तक स्कूल वापस नहीं पहुँची है। और किसी भी टीचर या ड्राइवर के साथ संपर्क नहीं हो पा रहा है। मैं थोड़ी देर में तुम्हें लेने आ रही हूँ। हम वीर के

स्कूल चलेंगे।' इतना कहकर मम्मी ने फोन रख दिया।

सोनू घबरा गया। कुछ देर तक तो वह बेसुध सा बैठा रहा। उसे तरह-तरह के विचार आने लगे। 'क्या वीर की बस का ऐक्सिडन्ट हो गया होगा? किसी ने बस किड्नैप कर ली होगी? बस अदृश्य कैसे हो गई!'

उसकी नज़र टी.वी. स्क्रीन पर गई। अभी भी टी.वी. पर सुनीता विलियम्स की बातें चल रही थीं। उसने सोचा, 'यदि अंतरिक्ष से किसी ऐस्ट्रनॉट का मैसेज धरती तक पहुँच सकता है तो मेरी प्रार्थना भी भगवान तक पहुँच ही सकती है न!'

सोनू ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, 'हे प्रभु, वीर और वीर की बस के सभी बच्चों को सही सलामत रखना। प्लीज़, आप सबकी रक्षा करना। उन्हें कोई भी हेल्प की ज़रूरत हो तो करना।' सोनू अपने दिल की बात भगवान के साथ करता रहा। उसे इसकी जानकारी नहीं थी कि प्रार्थना के लिए किन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन इतना विश्वास ज़रूर था कि दिल से की हुई उसकी प्रार्थना ज़रूर स्वीकार होगी। पता नहीं प्रार्थना में क्या जादू था कि थोड़ी ही देर में उसकी सारी घबराहट दूर हो गई।

थोड़ी देर बाद उसे गाड़ी का हार्न सुनाई दिया। मम्मी उसे लेने आई थीं। उसने पानी की बॉटल हाथ में ली, घर बंद करके बाहर निकला और गाड़ी में जाकर बैठ गया।

मम्मी टेन्शन में थीं। वीर और मम्मी स्कूल पहुँचे। स्कूल के ग्राउन्ड

में विद्यार्थियों के परिवार वाले इकट्ठे हो गए थे। प्रिन्सिपल सर ने अत्यंत खेद सहित सबको बताया कि 'हम अभी तक बस से संपर्क नहीं कर पाए हैं। कोशिश जारी है। जैसे ही कुछ पता चलेगा, हम आप लोगों को सूचित कर देंगे।'

कुछ पेरेन्स की आँखों में आँसू थे, तो कुछ चिंतातुर थे। कुछ प्रिन्सिपल सर के साथ गुस्से से बात कर रहे थे, तो कुछ कोने में बैठकर आँखें बंद करके प्रार्थना कर रहे थे।

यह दृश्य देखकर सोनू को एक विचार आया और वह तुरंत ही प्रिन्सिपल सर के पास गया। उसने सर से माइक में बोलने की परमिशन माँगी। सोनू माइक के पास खड़ा होकर बोला, 'सबको सही सलामत वापस लाने का मेरे पास एक उपाय है। थोड़ी देर पहले मुझे भी अपने भाई वीर के लिए टेन्शन हो रहा था। लेकिन फिर मैंने प्रार्थना की और मेरी टेन्शन चली गई। मुझे साइन्स के प्रयोग करना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए कोई भी बात पर विश्वास करने से पहले मैं प्रयोग करता हूँ। मैंने प्रार्थना का प्रयोग किया और मुझे परिणाम मिला। और इसीलिए ही मुझे लगता है कि हम सब साथ मिलकर प्रार्थना करेंगे तो बहुत अच्छा रिज़ल्ट आएगा। यदि मैं अकेला

प्रार्थना करता हूँ तो एक ही सिग्नल जाएगा। लेकिन अगर हम सब लोग साथ मिलकर प्रार्थना करेंगे तो? सिग्नल सौ गुना स्ट्रोंग हो जाएगा!'

वैसे भी प्रार्थना के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं था। पेरेन्स ने सभी प्रयत्न कर लिए थे। लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। सभी ने प्रार्थना शुरू की।

आधे घंटे में तो स्कूल का वातावरण एकदम शांत हो गया। भले ही स्कूल की बस वापस नहीं आई थी लेकिन गुस्सा, परेशानी और चिंता ग्राउन्ड से चले गए।

तभी प्रिन्सिपल सर का फोन बजा। सर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। 'स्कूल बस आ रही है, बस वापस आ रही है!' सर ने दौड़कर सोनू को गले से लगा लिया। उनकी आँखों में आँसू थे। हर तरफ खुशी की लहर दौड़ गई। सभी ने राहत की साँस ली।

'लेकिन हुआ क्या था?' सबके मन में यही सवाल था। सर ने विस्तार से सारी बात बताई।

"बस निर्धारित समय से पहले ही स्कूल के लिए निकल गई थी। लेकिन समय बचने के कारण रास्ते में यह तय हुआ कि वे 'सुरंगनाथ गुफा' देखकर स्कूल वापस लौटेंगे। उन लोगों ने सोचा कि गुफा देखने में एक घंटे से ज्यादा समय नहीं लगेगा। उस वक्त उस एरिया में थोड़ा कंपन हुआ। शायद कम तीव्रता का भूकंप आया होगा। कोई चट्टान टूटी या क्या हुआ यह पक्का पता नहीं। लेकिन बच्चे और टीचर्स गुफा में फँस गए होंगे। ज्यादा जानकारी तो उनके आने के बाद ही मिल पाएगी।" सर ने कहा।

प्रिन्सिपल सर ने एक बार फिर से सभी पेरेन्स से हाथ जोड़कर माफी माँगी और सबको विश्वास दिलाया कि ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी।

पेरेन्स का गुस्सा शांत हो चुका था। यह बात सभी की समझ में आ गई थी कि 'ऐसा निर्णय क्यों लिया गया और क्यों नहीं' इन सब चर्चाओं का कोई अर्थ नहीं है। और यह भी समझ में आ गया था कि जब कोई उपाय काम नहीं आता तब प्रार्थना अवश्य काम आती है।

तभी बस का हार्न सुनाई दिया। जैसे ही बच्चे बस से उतरे उनकी नन्हीं आँखें अपने माता-पिता को ढूँढने लगीं। सभी बच्चे अपने माता-पिता को ढूँढ़कर उनके गले लग गए।

बस से उतरकर वीर अपनी मम्मी और सोनू की तरफ दौड़ा और दोनों से लिपट गया। मम्मी और सोनू से मिलकर वीर को इतनी खुशी पहले कभी नहीं हुई थी। फिर कुछ देर बाद वीर ने हँसते हुए पूछा, 'तो सोनू, कैसा रहा तुम्हारा स्वतंत्रता दिवस?'

'भैया! अब तो मैं प्रार्थना करूँगा कि मुझे स्वतंत्रता दिवस कभी नहीं चाहिए। मुझे तो हमेशा तुम्हारे साथ ही रहना है!' सोनू फिर से अपने बड़े भाई के गले लग गया।

चलो खेलें...

जो़ई की प्रार्थना बुक के पहले पेज को डेकोरेट करने में जो़ई की मदद करें।

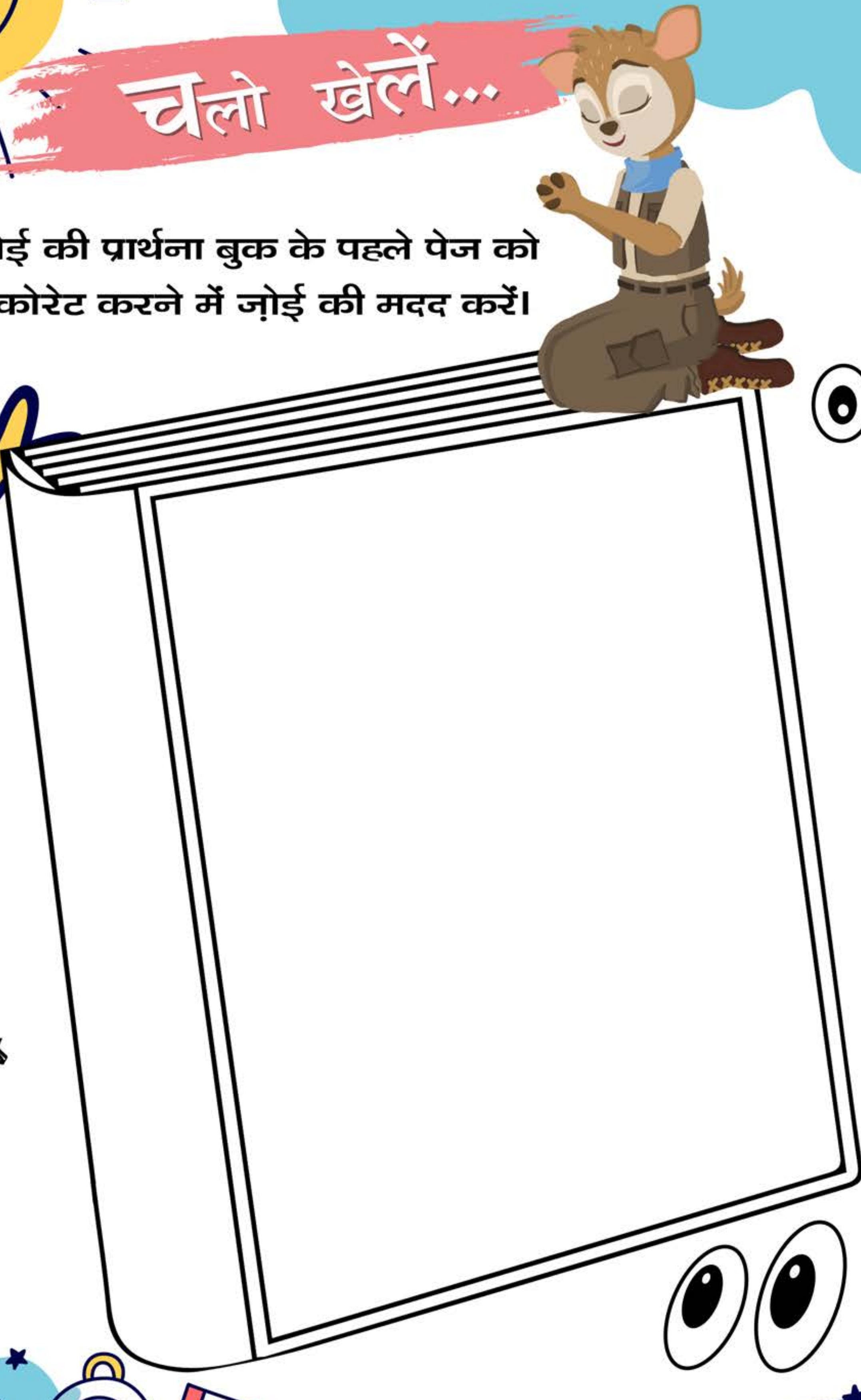

फेल्को को मेलका के पौधे तक पहुँचने का रास्ता ढूँढने में मदद करें। लेकिन...लेकिन...लेकिन... फेल्को को मेलका के पौधे की ज़रूरत क्यों पड़ी? यह जानने के लिए पेज नं - २० से २७ तक पढ़ें।

AALOO CHILLY

अब तक की आलू-चिली
की कहानियाँ एक साथ
पढ़ने के लिए...
Click Here
https://shorturl.at/U7ogo

अपसेट होकर चिली थीओ के कैफ़े पर गया। पार्सली और आलू भी चिली को सरप्राइज़ पार्टी देने के लिए कैफे जाने के लिए निकले। पार्सली के मना करने के बावजूद आलू ने कोको को पार्टी में आने के लिए कहा। चलो देखते हैं, थीओ के कैफ़े पर पहुँचकर चिली ने क्या देखा?

जब मैंने ऊपर से थीओ के कैफ़े पर बैनर देखा 'बेस्ट सिंगर, बेस्ट फ्रेन्ड चिली' तो पहले तो मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

फिर जब मैंने नीचे जाकर देखा तो मुझे और भी हैरानी हुई। थीओ का कैफ़े एक पार्टी-प्लेस बन गया था। सारे कप पर मेरे फोटो थे। उस फोटो में मैं गा रहा था। क्या आलू ने 'आलू शेक' का नाम फिर से 'चिली शेक' कर दिया? लेकिन मैं तो जीता भी नहीं था। चारों ओर मेरे फोटोज़ लगे थे। जब मैंने पहली बार सिंगिंग क्लास जॉइन की, पहली बार नदी किनारे गाना गाया, मेरा पहला कॉम्पिटिशन, मेरे सिंगिंग की

स्पेशल टी-शर्ट जो मम्मी-पापा ने मेरे लिए खरीदी थी... ये सभी यादें उन फोटोज़ में थीं। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने सिंगिंग स्पेसशिप में बिठाकर मुझे टाइम ट्रैवल करा दिया हो। अब मेरे शरीर में जलन नहीं हो रही थी।

थीओ को अभी तक पता नहीं चला था कि मैं आ गया हूँ। थीओ और ज़ोई किचन में तैयारी करते हुए बातें कर रहे थे, 'आलू तो बेस्ट है ही लेकिन चिली जैसा तो कोई नहीं है।' तो ज़ोई बोली, 'हाँ, सच में! कौन आखिरी मिनिट में अपना सॉन्ग बदलकर इस तरह कोको को जीतने देगा! कितना बड़ा दिल है उसका...' मैंने सोचा, 'ये लोग क्या बातें कर रहे हैं? मैने कोको को जीतने दिया?'

मैं कुछ समझ पाता या कुछ पूछता तभी मुझे घरर.. घरर... स्केट्स की आवाज़ सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो आलू फुल स्पीड में आ रहा था। स्पीड के कारण उसका बड़ा सा पेट इतनी ज़ोर से उछल रहा था कि पकड़ा-पकड़ी खेलती हुई पाँच मक्खियाँ उसकी चपेट में आ गई और उसके पेट से टकराकर चक्कर खाकर गिर गईं।

मैं उसे कुछ कहता उससे पहले ही उसका चेहरा देखकर मुझे पता चल गया कि आलू का स्केट्स पर कन्ट्रोल नहीं है। अगर मैं नहीं उड़ूँगा तो मेरा हाल भी उन मक्खियों जैसा हो जाएगा। मैं जैसे ही उड़ने लगा तभी आलू पेड़ से टकराकर ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने सोचा, 'क्या यह एक स्केटिंग चैम्पियन है?!' इससे पहले कि मैं उसे कुछ कहता, मुझे ज़ोर से वही कर्कश आवाज़ सुनाई दी, 'चि...ली...' मैं मुड़कर देखता उससे पहले पार्सली आकर मुझसे ज़ोर से टकराया और मुझे गोल-गोल घूमा दिया। वह भी आलू की तरह पेड़ से टकराकर आलू पर गिर पड़ा। आलू का तो समझ में आता है, लेकिन पार्सली इतना बड़ा हो गया फिर भी उसे उड़ना नहीं आता! गोल-गोल घूमने के कारण मुझे भी मक्खियों की तरह चक्कर आ गए।

जो कुछ हुआ वह कम था कि आलू ने कहा, 'मैं जीत गया।' तो थूक उड़ाते हुए पार्सली ने ज़ोर से कहा, 'नहीं, मैं जीत गया।' और फिर दोनों ज़ोर से हँसने लगे। कहीं पेड़ से टकराने के कारण दोनों के दिमाग पर कुछ असर तो नहीं हुआ होगा न? मुझे अभी भी चक्कर आ रहे थे। तभी किसी ने मेरा हाथ पकड़ा।

भगवान का शुक्र है! मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने कहा, 'थैंक यू, इस पार्सली ने तो सब गोल-गोल घूमा दिया।' चक्कर कम होने पर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मुझे पकड़ने वाला कोई और नहीं बल्कि कोको थी। वह मेरे सामने बत्तीसी दिखाकर हँस रही थी। उसने मुझसे पूछा, 'चिली, तुम ठीक हो न?' मैं उसे कहना चाहता था कि 'तुम यहाँ हो तो मैं कैसे ठीक हो सकता हूँ?'

आलू की इतनी कोशिशों के बाद चिली कितना खुश हो गया था। लेकिन कोको को देखकर हमेशा चिली की खुशी गायब क्यों हो जाती है?

मरीन पॉक्स

फेल्को एक साइन्टिस्ट था। उसने समुद्री प्राणियों के लिए बहुत सारी दवाईयों की खोज की थी। अब वह अपने पापा का अधूरा काम, यानी कि मरीन-पॉक्स नाम की बीमारी की दवाई खोजने का काम शुरू करने वाला था। आसपास के समुद्रों में मरीन-पॉक्स फैल गया था। उनके समुद्र तक यह रोग पहुँचे उससे पहले ही फेल्को उसकी दवाई ढूँढ़ निकालना चाहता था।

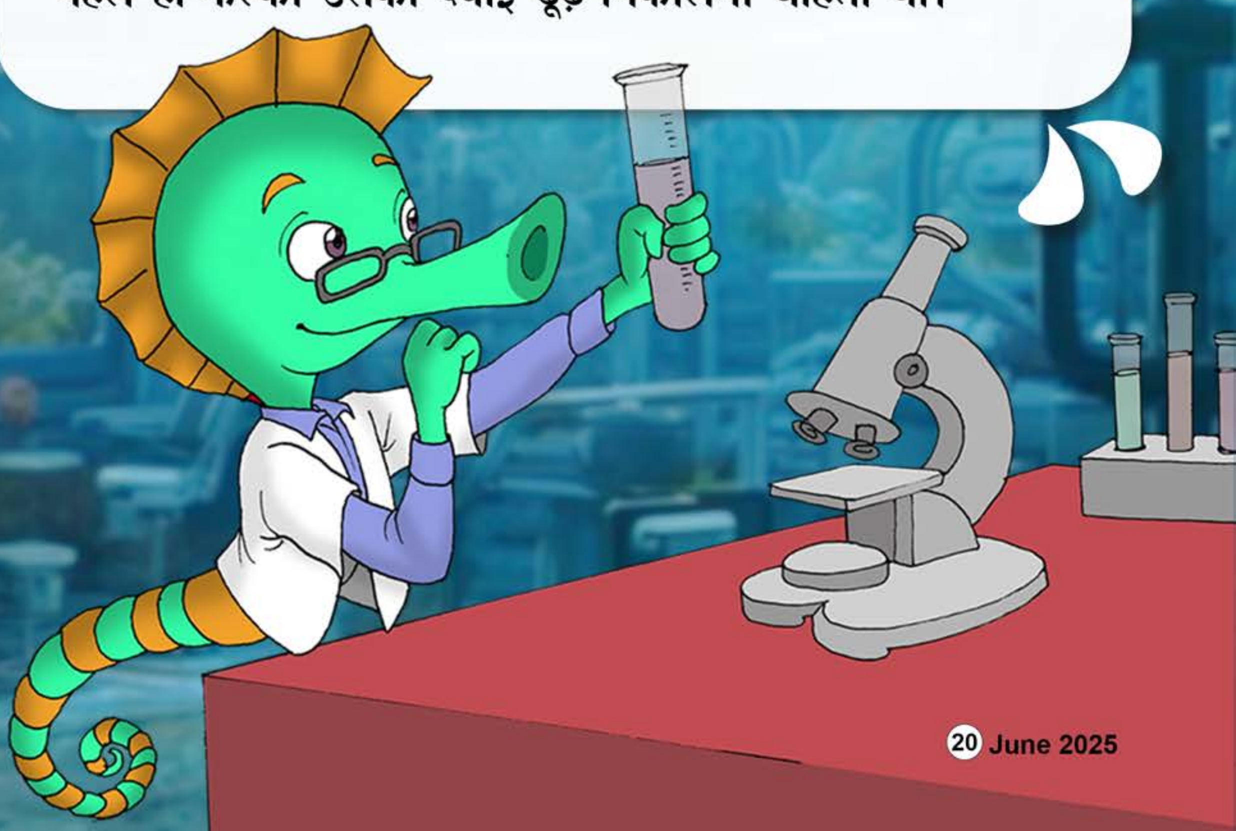

फेल्को अपने चाचा के साथ रहता था। चाचा रोज़ समुद्र के उस पार एक मंदिर में जाते थे। यह देखकर फेल्को को आश्चर्य होता। एक दिन चाचा ने फेल्को से पूछा, 'क्या तुम भी मेरे साथ आओगे? भगवान से प्रार्थना करके अपना नया काम शुरू करना।' फेल्को ने तुरंत मना कर दिया, 'भगवान से आशा रखूँगा, तो मैं क्या करूँगा?'

चाचा ने उसे समझाने की कोशिश की, 'जैसे तुम्हें अच्छी दवाई बनानी हो तो बहुत सारे इन्ग्रीडीअन्ट की ज़रूरत पड़ती है न? ठीक वैसे ही, कोई भी काम अच्छी तरह हो उसके लिए प्रार्थना एक इन्ग्रीडीअन्ट है। इसमें भगवान से आशा रखने की बात ही नहीं है।' लेकिन फेल्को को चाचा की बात समझ में नहीं आई।

वह घंटों अपनी लेबोरेटरी में काम करता रहा। उसके पापा ने जितना रिसर्च किया था वह सब उसने स्टडी कर लिया। समुद्र में मिलने वाली लगभग सभी वनस्पतियों की उसने जाँच कर ली। लेकिन कोई भी वनस्पति मरीन-पॉक्स के वाइरस के लिए दवाई बनाने के काम आए ऐसी नहीं थी।

फेल्को दिन-रात एक करके काम करता रहा। लेकिन उसे सफलता नहीं मिल रही थी। एक दिन चाचा ने फिर से उससे कहा, 'फेल्को, प्रार्थना करके देखो। शायद कोई उपाय मिल जाए।' लेकिन फेल्को ने चाचा की बात नहीं मानी और हार भी नहीं मानी। उसे अपने समुद्री परिवार और मित्रों को इस बीमारी से बचाना ही था।

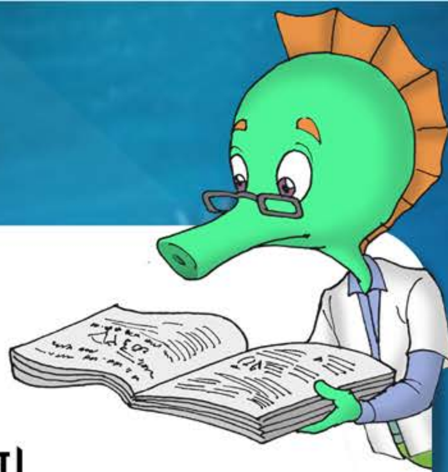

अचानक, एक दिन अपने पापा के नोट्स पढ़ते समय उसने 'मेलका' नामक पौधे के बारे में पढ़ा।

मेलका के गुणों को पढ़कर उसे लगा कि 'यह पौधा ज़रूर मेरे काम आएगा।' उस पौधे को ढूँढ़ते हुए वह अपने घर से बहुत दूर निकल गया और एक अंधेरी गुफा में उसे मेलका का पौधा मिल गया।

सैंपल लाकर उसने लेबोरेटरी में टेस्ट किया और उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। चाचा ने उससे पूछा, 'क्या हुआ? इतने खुश क्यों हो?' फेल्को ने कहा, 'चाचाजी, दवाई बन गई!! हमारा समुद्र मरीन-पॉक्स से बच जाएगा। बस, अब पर्याप्त दवाई बनाने के लिए मेलका के और अधिक पौधे मिल जाएँ तो काम हो जाएगा!'

समुद्र में फेल्को की खोज की घोषणा की गई। सभी ने मिलकर जश्न मनाया। लेकिन यह खुशी ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सकी। कुछ ही दिनों में 'मरीन पॉक्स' उनके समुद्र तक पहुँच गया। पाँच लोगों को बीमारी हो गई। लेकिन मेलका के और अधिक पौधे मिले नहीं थे। इसलिए दवाई के सैंपल बहुत ही कम थे।

फेल्को की चिंता का पार नहीं था। वह बहुत निराश हो गया। 'चाचाजी, अब मैं क्या करूँ? दवाई का पौधा भी मिल गया और किस तरह बनाना है यह भी पता चल गया। लेकिन अगर और अधिक पौधे नहीं मिलेंगे तो दवाई कैसे बनाएँगे?'

चाचा ने कहा, 'बेटा, मेरे साथ मंदिर चलो। हम साथ में मिलकर भगवान से प्रार्थना करेंगे। शायद कोई उपाय मिल जाए।' फेल्को के पास प्रार्थना के सिवाय कोई उपाय नहीं था। वह चाचा के साथ मंदिर गया।

उसने भगवान से प्रार्थना की, 'हे प्रभु, आप जानते ही होंगे न कि मैंने दिल से और बहुत मेहनत से यह दवाई बनाई है। दवाई के पौधे की कमी के कारण यह बीमारी फैल रही है। प्लीज़, कुछ उपाय बताइए।' फेल्को की आँखों में आँसू आ गए।

मंदिर से बाहर निकलते ही उसकी नज़र एक जगह पर पड़ी और वह दौड़कर वहाँ पहुँच गया। और फिर दौड़ता हुआ आया और चाचा को गले लगा लिया।

'चाचाजी, यहाँ तो ढेर सारे मेलका के पौधे हैं! सब जगह खोजा था, सिर्फ यहाँ नहीं आया था! अब दवाई की कोई कमी नहीं होगी। मरीन-पॉक्स से किसी की मृत्यु नहीं होगी। चाचाजी, प्रार्थना ने तो जादू कर दिया!' फेल्को की आँखों में खुशी के आँसू थे।

‘नहीं बेटा, प्रार्थना जादू नहीं करती। दवाई बनाने के लिए जिस एक इन्ग्रीडीअन्ट की कमी थी, वह प्रार्थना से पूरी हो गई।’ चाचा ने फेल्को के सिर पर प्यार से हाथ फेरा।

फेल्को ने अपने मित्रों की मदद से मेलका के पौधों से दवाई बनाकर अपने और आसपास के समुद्रों से मरीन-पॉक्स को भगा दिया।

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स यूरोप टूर पर निकले हैं। जर्मनी में साइट्सीइंग के बाद वे ऑस्ट्रीया देश की राजधानी विएना (Vienna) पहुँचे। पहले दिन वे एक विशाल चर्च में गए। सभी ने प्रार्थना की। प्रार्थना करने के बाद रिज़ो बहुत खुश था।

ज़ोई : क्या हुआ रिज़ो? इतने खुश क्यों हो?

रिज़ो : क्योंकि मैंने प्रार्थना की इसलिए। तुम्हें पता है? मैं जो भी प्रार्थना करता हूँ न, वह हमेशा पूरी होती है। ट्रिप से पहले जब मेरा पासपोर्ट खो गया था न, मैंने प्रार्थना की तो मुझे मिल गया। अरे, मुझे

एग्ज़ाम से पहले गणित के सवाल नहीं आते थे। मैंने प्रार्थना की तो मुझे आ गए। मुझे वो वाले शूज़ खरीदने थे न, मैंने उसके लिए प्रार्थना की तो मम्मी ने मुझे दिलवा दिए।

ज़ोई : शूज़ के लिए भी कोई प्रार्थना करता होगा भला?

रिज़ो : मैं तो करता हूँ। तुम्हारी प्रार्थना पूरी नहीं होती होगी, इसलिए तुम ऐसा कह रही हो।

ज़ोई ने कोई जवाब नहीं दिया। तभी थीओ ने सभी से कहा, 'अल्बर्टिना म्यूज़ीयम (Albertina museum) जाने के लिए बस रेडी है।'

अल्बर्टिना म्यूज़ीयम में शानदार पेन्टिंग्स थीं। गाइड ने वहाँ की एक पेन्टिंग की स्टोरी बताई और वह सुनने के बाद जिफ्फी का हाल बेहाल है। टिश्यू पेपर कम पड़ गए हैं।

कहानी थी, म्यूज़ीयम की एक पेन्टिंग - 'द प्रेयिंग हैन्ड्स (The Praying Hands)' की। यह पेन्टिंग जर्मन आर्टिस्ट अलब्रेक्ट ड्यूरर (Albrecht Durer) ने बनाई है।

बचपन से ही अल्ब्रेक्ट और उनके भाई अल्बर्ट को चित्रकार बनना था। लेकिन उन्हें चित्र शाला में पढ़ाने के लिए उनके मम्मी-पापा के पास पैसे नहीं थे। दोनों ने एक डील की। उसमें से एक स्कूल जाकर पढ़ाई करेगा और दूसरा काम करेगा। और जब एक की

पढ़ाई पूरी होगी तो वह काम करेगा और दूसरा पढ़ाई करने जाएगा। सिक्का उछालकर फैसला हुआ कि कौन क्या करेगा। पहले अल्ब्रेक्ट स्कूल जाएगा और अल्बर्ट काम करेगा।

अल्ब्रेक्ट बहुत होशियार था। उसकी कलाकारी उसके टीचर्स से भी ज्यादा अच्छी थी। थोड़े ही समय में वह सब कुछ सीख गया और उसने बहुत अच्छा काम किया। और दूसरी तरफ, अल्बर्ट ने चार सालों तक कोयले की खान में काम किया। डील के अनुसार अल्ब्रेक्ट अपनी पढ़ाई पूरी करके अपने भाई के पास वापस आया और कहा, 'भाई, अब पढ़ाई की तुम्हारी बारी है। अब मैं तुम्हारा ध्यान रखूँगा।'

इस पर अल्बर्ट ने अपने भाई से कहा, 'खान में काम करने के कारण मेरी ऊँगलियाँ एकदम टेढ़ी-मेढ़ी हो गई हैं। अब इन ऊँगलियों से पेन्टिंग नहीं हो पाएगी। लेकिन भाई मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ। तुम बहुत आगे बढ़ो।' एक दिन अल्ब्रेक्ट ने अपने भाई को हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए सुना, 'हे प्रभु, मेरा भाई जीवन में बहुत आगे बढ़े। उसे सारी सफलताएँ मिलें।'

यह देखकर अल्ब्रेक्ट ने अपने भाई के हाथों का एक चित्र बनाया। इस चित्र को बनाने के पीछे अल्ब्रेक्ट की यह भावना थी कि 'मेरी सफलता के पीछे मेरे भाई की प्रार्थना और उसके हाथों की

मेहनत है।' यह चित्र पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गया। इस बात को लगभग ४५० साल बीत चुके हैं। आज भी पश्चिमी देशों के घरों और ऑफिसों में 'द प्रेयिंग हैन्ड्स' का चित्र देखने को मिलता है।

और बस, यह कहानी सुनकर जिफ्फी के टिश्यू कम पड़ गए। ज़ोई को यह कहानी इतनी पसंद आई कि उसने अपनी छोटी सी नोटबुक में दोनों भाईयों के नाम लिखे और कुछ प्रश्न पूछने के लिए गाइड के पास दौड़कर गई। वह अपनी छोटी नोटबुक वहीं भूल गई। रिज़ो ने उसकी नोटबुक उठाई। उसकी नज़र पन्नों पर लिखे हुए शब्दों पर गई। यह पढ़कर रिज़ो की आँखों से भी टप-टप आँसू गिरने लगे।

ज़ोई की नोटबुक का टाइटल था, 'माइ प्रेयर बुक' और ज़ोई ने अंदर लिखा था, 'हे प्रभु, मेरी प्रार्थना यही है कि आप मेरे सभी फ्रेन्ड्स की प्रार्थना पूरी करना।'

रिज़ो को याद आया कि उसने ज़ोई से न जाने क्या-क्या कह दिया था। रिज़ो ने खुद तो नहीं करने जैसी बातों के लिए भी प्रार्थना की थी, जबकि ज़ोई ने तो सिर्फ इतनी ही प्रार्थना की थी कि सबकी प्रार्थना पूरी हो।

'हे प्रभु, मेरी प्रार्थना
यही है कि आप मेरे
सभी फ्रेन्ड्स की
प्रार्थना पूरी करना।'

बच्चों के लिए Games & Fun के साथ ज्ञान का खज़ाना पाएँ, kids website पर...
जो अब नए Format में है... तो आज ही Visit करें...

kids.dadabhagwan.org

https://shorturl.at/CnMSA

DBF • अक्रमज